सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान :- मैं आत्मा सफलता का सितारा हूँ.....।

योग का अभ्यास :- सर्वशक्तिवान शिव बाबा की सर्वशक्तियों की चमकती हुई किरणें मुझ सफलता के सितारे में समाती जा रही हैं ..., मैं सफलता का सितारा पूरी तरह समर्थ बन गया हूं....। मुझ सितारे से निकल रही किरणें संसार की सर्व आत्माओं में समा रही हैं, संसार की सर्व रोगी, दु:खी, अशान्त, भटकती, तड़पती, आत्माओं के दु:ख, दर्द, टेन्शन, चिन्ता आदि सब बीमारियां समाप्त हो रही हैं, सब आत्माएं परमात्म शक्तियों का अनुभव कर रही हैं, परमात्म प्यार का अनुभव कर रही हैं, सच्चा सुख, शान्ति व आनन्द का अनुभव कर रही हैं...। इसी विजन के साथ पूरा आनंदित होकर वायुमण्डल में सकाश फैलाने की सेवा करनी है.....।

बाप-समान व सफलतामूर्त बनने की विधि - सदैव सर्व-आत्माओं के प्रति शुभ भावना और शुद्ध कामना रखो। चाहे आपके सामने कोई भी परीक्षा का रूप आवे, चाहे डगमग करने के निमित्त बन कर आवे लेकिन हरेक आत्मा के प्रति आप शुभ कामना और शुद्ध भावना यह दो बातें हर संकल्प, बोल और कर्म में लाओ, तो आप सफलता के सितारे बन जायेंगे। ब्राह्मणों का यही धर्म और यही कर्म है। जो धर्म होगा वही कर्म होगा। बाप की हर बच्चे के प्रति यही शुभ कामना और शुद्ध भावना है कि वह बाप से भी ऊंच बने। मास्टर सर्वशक्तिमान् यदि दृष्टि व वृत्ति की बात कहें तो क्या शोभता है? अर्थात् सर्वशक्तिमान् बाप के आगे, मास्टर सर्वशक्तिमान् कमजोरी की बातें करते हैं तो अब बाप इशारा देते हैं कि अब मास्टर बनो, क्योंकि स्वयं को बनाकर फिर विश्व को भी बनाना है।

- शिव भगवानुवाच -सफलता के सितारों की निशानियां :-

- उनके हर संकल्प में दृढ़तापूर्वक निश्चय होगा कि शत-प्रतिशत सफलता हमारी हुई पड़ी है।
- उनके स्वपन में भी नहीं आएगा कि सफलता होगी कि नही होगी। वे हर बात में निश्चय बुद्धि होंगे।
- उनके बोल में ईश्वरीय सन्तान की खुमारी व ईश्वरीय नशा दिखाई देगा।
- उनका हर बोल शक्तिशाली होगा जिससे संशय बुद्धि वाला भी निश्चय बुद्धि हो जायेगा।
- उनके बोल साधारण व व्यर्थ नहीं होते। उनमें देह-अभिमान का नशा नहीं दिखाई पड़ेगा।
- उनका हर कर्म श्रेष्ठ, शिक्षा स्वरूप होगा, हर कर्म अनेक आत्माओं को पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जाता है।
- ऐसे संकल्प, बोल और कर्म वाला हर बात में सदा स्वयं से सन्तुष्ट व हर्षित भी होगा।

सफलतामूर्त से अन्य आत्मायें भी सदा संतुष्ट रहेंगी अर्थात् उन सर्व की संतुष्टता की सफ़लता, प्रत्यक्ष फल के रूप में दिखाई देगी। भविष्य फल नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष फल ऐसे सदा हर्षित आत्मा को देख कर, अन्य आत्मायें भी, उनके प्रभाव से, दु:ख व उलझन की लहर से बदल कर हर्षित हो जावेंगी। अर्थात् ऐसी आत्मा के सम्पर्क में और उसके समीप आने से अन्य आत्माओं पर भी हर्ष का प्रभाव पड़ जायेगा। जैसे सूर्य के समीप व सम्मुख जाने वाले के ऊपर, न चाहते भी किरणें पड़ती रहती हैं। ऐसे ही सफ़लतामूर्त के हर्ष की किरणें, अन्य आत्माओं पर भी पड़ती हैं अर्थात् जैसे कि बाप के संग का रंग, एक सेकेण्ड में अनुभव करते हो। अर्थात् जब योग-युक्त होते हो तो बाप का संग लगता है तो उसके रंग का अनुभव होता ना? ऐसे ही सफ़लता के सितारों के संग का रंग, अन्य आत्माओं को भी अनुभव होता है। यह है सफलतामूर्त व सफलता के सितारों की निशानी।

दूसरा सप्ताह

स्वमान - मैं सर्व ईश्वरीय खजानों से सम्पन्न आत्मा हूँ।

चार प्रकार के खजाने - ज्ञान का खजाना, योग का खजाना, धारणाओं का खजाना, सेवा द्वारा दुवाओं का खजाना।

ज्ञान के खजाने से प्राप्तियां - व्यर्थ और निगेटीव से मुक्त रहते हैं। दु:ख और अशांति से मुक्त रहते हैं। माया के विभिन्न प्रकार के वार से सुरक्षित रहते हैं। ऊंच पद की प्राप्ति होती है। हर क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होती है। राईट और रांग की समझ मिल जाती है।

योग का खजाना - विकर्म विनाश होते हैं। सर्व शक्तियों की प्राप्तियां होती हैं। स्वराज्य अधिकारी बनते हैं। परमात्म प्यार का अनुभव होता है। जन्म-जन्म निरोगी काया प्राप्त होती है। आयु बढ़ती है। संस्कारों में दिव्यता आती है।

धारणाओं का खजाना - जीवन में दिव्यता आती है। मनुष्य से देवता बनते हैं। प्रभु-प्रिय, स्वयं-प्रिय और लोक-प्रिय बनते हैं। सबके लिए आदर्श बन जाते हैं। जीवन दिव्य गुणों से सुशोभित हो जाता है।

सेवा का खजाना - अनेक आत्माओं की दुआएं मिलती है, जिसके फलस्वरुप खुशी की प्राप्ति होती है। जीवन में संतुष्टता आती है। समय पर सभी का सहयोग मिलता है। भगवान भी समय पर सहयोग देने के लिए बंध जाते हैं। सर्व के प्रिय बन जाते हैं।

खजानों को बढ़ाने की विधि - निमित्त भाव, निर्मान भाव, निर्मल वाणी। स्वयं प्रति व अन्य के प्रति कार्य में लगाना। बाबा करा रहा है - यह स्मृति रखना। बार-बार स्वचेकिंग। दुआएं लो और दुआएं दो। बाप को अपना साथी बनाकर रखो। बाप से प्यार करना सीखो। फालो फादर करो। आत्म-अभिमानी स्थिति में रहो। सुखदेव बन जाओ। समय पर सभी के सहयोगी बनो। सभी के उमंग-उत्साह को बढ़ाओ। सिखाने की भावना हो। अपने श्रेष्ठ बोल से व अपनी श्रेष्ठ भावनाओं द्वारा भी दुआ का खजाना बढ़ता है। किसी आत्मा की कमजोरी को दूर कर उसके जीवन को महान बनाकर। नाम-मान-शान का त्याग कर दूसरों को आगे बढ़ाने से खजाने बढ़ते जाएंगे।

विघ्नविनाशक के .. पृष्ठ 5 का शेष

विघ्न चींटी समान है - हमें यह स्मृति रहे कि वर्तमान के विघ्न तो हमारे लिए चींटी समान है। असली विघ्न तो अभी आने हैं। विनाशकाल में हमें पग-पग पर अनेक अकल्पनीय विघ्नों से गुजरना होगा। और जिन्होंने सच्चे दिल से ईश्वरीय कार्य में सहयोग दिया है, उन्हें विनाशकाल में ईश्वरीय सहयोग प्राप्त होगा। विनाश-काल के समय विघ्नों पर विजयी बनने के लिए अभी से ही निर्विघ्न व विघ्न-विनाशक स्थिति का अभ्यास चाहिए क्योंकि खाने-पीने की समस्याओं के साथ-साथ हमें अपना सब कुछ नष्ट होते भी देखना होगा। सभी तरह के माया के प्रकोप अंतिम विदाई लेने के लिए हमारे समक्ष उपस्थित होंगे। यदि हम अपने मनोबल को ऊंचा नहीं रखेंगे व ज्ञानस्वरूप नहीं रहेंगे तो हमारी घबराहट ही हमारी हार का कारण बन सकती है।

हे विश्व की सबसे अधिक शक्तिशाली आत्माओं, तुम्हें तो समस्त संसार से विघ्नों के मेघ हटाने हैं... तुम्हें अनेकों को जीवन दान देना है.. तुम कमजोर नहीं हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तुम अकेले भी नहीं हो, शक्तिशाली ईश्वरीय परिवार व समर्थ भगवान तुम्हारे साथ है। अत: शेर की तरह निर्भीक बन जाओ। विघ्नों को खेल की तरह पार कर लो। धैर्यता व गंभीरता के बल पर एक आदर्श प्रस्तुत करो ताकि संसार जन्म-जन्म तुम्हें विघ्न-विनाशक के रूप में याद करता रहे और अब भी तुम्हारी याद आते ही मनुष्यों में विजयी बनने का साहस आ जाये।

राष्ट्र के विकास... पृष्ठ 12 का शेष

बीज बोया व फसल की सम्भाल की तो अच्छी क्वालिटी की फसल हुई और उसकी पैदावार भी अधिक मात्रा में हुई। चौधरी चरणसिंह हरियाणा एग्रीकल्चर युनिवर्सिटी रिजनल रिसर्च सेंटर, करनाल के प्रिंसीपल साइंटिस्ट समर सिंह ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने जो संसाधन हमें दिए उनका संरक्षण करने की आवश्यकता है। यौगिक खेती अपनाने से जमीन की उर्वरा शक्ति लम्बे समय तक कायम रह रहती है। फसल शुद्ध वातावरण में तैयार होगी तो उसका उपयोग करने वाली आत्माएं भी शुद्ध मानस वाली होंगी।इस कार्यक्रम को ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.सरला कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

जयपुर। 'महिला स्वास्थ्य परिक्षण शिविर' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.पूनम साथ में हैं महिला कल्याण संगठन उत्तर पश्चिम रेलवे की अध्यक्षा अमीता बुघेला तथा अन्य।

आलीबाग। 'प्लेटिनम जुबली' पर दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जिला अध्यक्षा वासंती उमरेडकर, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.संतोष, ब्र.कु.वंदना, ब्र.कु.दत्तात्रय तथा अन्य।

देवलाली प्रवरा। ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं पूर्व विधायक चंद्रशेखर कदम, समाज सेवक फ्रांसिस, नगराध्यक्षा मंदाकीनी, ब्र.कु.नंदा तथा अन्य।

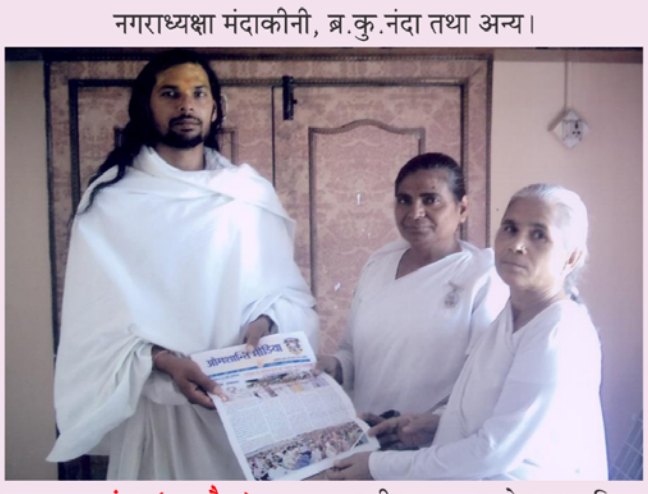

गुरुसहायगंज (कन्नौज)। ब्रह्मदास जी महाराज को आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात् ओम शांति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.नीलम।

मालवीय नगर, जयपुर। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम में मंचासीन हैं मेयर ज्योति खण्डेलवाल, सचिव गिरिराज गर्ग, ब्र.कु.चक्रधारी, ब्र.कु.पूनम एवं ब्र.कु.अविनाश।

पाटियाला। डिवीजनल कमिश्नर एस.आर.लधार को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शालू साथ में हैं ब्र.कु.योगिनी तथा अन्य।